International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अजंता के भित्तिचित्रों में नारी जीवन एवं स्त्री-प्रतिमाओं का अध्ययन

Dr. Richa Pathak

Assistant Professor
Department of Ancient History Archaeology and Culture
K.S. Saket P.G. College, Ayodhya

सार:
अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्र (frescoes) प्राचीन भारतीय कला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन चित्रों में नारी जीवन और स्त्री-प्रतिमाओं का अंकन अत्यंत गरिमापूर्ण, संवेदनशील और सजीव रूप में किया गया है। अजंता के कलाकारों ने महिलाओं को केवल सौंदर्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न रूपों और भूमिकाओं में चित्रित किया है।

परिचय

अजंता के भित्तिचित्रों में नारी जीवन और स्त्री-प्रतिमाओं के अध्ययन को निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. सामाजिक भूमिकाएँ और विविधता

अजंता के चित्रों में नारी के विविध सामाजिक रूपों को दिखाया गया है। इसमें किसी एक वर्ग की नहीं, बल्कि समाज के हर स्तर की महिलाओं का प्रतिनिधित्व है:

- राजसी महिलाएँ: महलों के दृश्यों में रानियों, राजकुमारियों और उच्च वर्ग की स्त्रियों को विलासिता और गरिमा के साथ बैठे या संवाद करते दिखाया गया है।
- परिचारिकाएँ और दासियाँ: रानियों की सेवा में लीन दासियों, चँवर (fly-whisk) धारण करने वाली स्त्रियों और द्वारपालिकाओं के चित्र भी प्रचुरता में हैं।
- नर्तकियाँ और संगीतकार: दरबार के दृश्यों में स्त्रियों को नृत्य करते और वाद्ययंत्र (जैसे ढोलक, वीणा, झांझ) बजाते हुए दिखाया गया है, जो उनके कलात्मक जीवन को दर्शाता है।
- साधारण और ग्रामीण महिलाएँ: भिक्षुणी के रूप में, या बाज़ार और घरेलू काम करते हुए आम महिलाओं का भी सजीव चित्रण है।

2. शारीरिक सौंदर्य और आदर्श स्त्री-प्रतिमा [1,2,3]

अजंता के कलाकारों ने गुप्त और वाकाटक काल के सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) के अनुरूप आदर्श स्त्री-देह का सृजन किया है:

- अंगों की सुडौलता: स्त्रियों को पतली कमर (क्षीर्ण कटि), चौड़े नितम्ब और उभरे हुए वक्षस्थल के साथ शास्त्रीय सौंदर्य के नियमों के अनुसार चित्रित किया गया है।

- त्रिभंग मुद्रा: अधिकांश नारी आकृतियों को 'त्रिभंग मुद्रा' (शरीर के तीन झुकाव) में खड़ा किया गया है, जो उनके भीतर एक प्रकार की गतिशीलता और शालीनता पैदा करता है।
- संवेदनशील हस्त-मुद्राएँ: स्त्रियों की उंगलियों और हाथों के इशारे (मुद्राएँ) इतने कोमल और भावपूर्ण हैं कि वे बिना बोले ही मन के भाव व्यक्त कर देती हैं।

3. वेशभूषा, श्रृंगार और आभूषण

चित्रों से तत्कालीन समय के समृद्ध फैशन और सौंदर्य बोध का पता चलता है:

- केशसज्जा (Hairstyles): अजंता की नारियों की केशसज्जा अद्भुत है। बालों को जूड़े, चोटियों, घुंघराले लटों और फूलों के गजरे से सजाया गया है।
- आभूषण: स्त्रियाँ मोतियों के हार (मुक्तावली), बाजूबंद, कंगन, कुंडल और करधनी पहने दिखाई देती हैं। मोतियों के लंबे हार उनके वक्ष से होते हुए नाभि तक लटकते हैं।
- पारदर्शी वस्त्र: स्त्रियाँ अत्यंत झीने या पारदर्शी वस्त्र (जैसे महीन सूती या रेशमी धोती/साड़ी) पहने हुए हैं, जिन पर सुंदर धारियां या लहरिया पैटर्न बने हैं।

4. भावनात्मक अभिव्यक्ति (Expressions)

अजंता की नारी-प्रतिमाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी आँखों और चेहरों से झलकने वाले भाव हैं:

- करुणा और भक्ति: बुद्ध के प्रति समर्पण, जातक कथाओं के दृश्यों में त्याग और करुणा के भाव महिलाओं के चेहरों पर स्पष्ट दिखाई देते हैं।
- कामुकता और शील का संतुलन: चित्रों में शारीरिक सौंदर्य होने के बावजूद कहीं भी अश्लीलता नहीं है। उसमें एक सात्विक सौंदर्य और शील (modesty) का पुट हमेशा बना रहता है।
- विरह और दुःख: गुफा संख्या 16 में चित्रित 'मरणासन्न राजकुमारी' (Dying Princess) का चित्र इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। स्वामी के विरह में डूबी और मृत्यु के करीब खड़ी राजकुमारी के चेहरे पर छाए दुःख और शिथिलता को कलाकारों ने अमर बना दिया है।

5. प्रमुख नारी चित्र (उल्लेखनीय उदाहरण)

- यशोधरा और राहुल (गुफा संख्या 17): भगवान बुद्ध जब संन्यास के बाद वापस लौटते हैं, तो यशोधरा अपने पुत्र राहुल को उन्हें भिक्षा के रूप में सौंपती है। इस चित्र में यशोधरा के चेहरे पर गौरव, दुःख और भक्ति का अद्भुत मिश्रण है।[4,5,6]
- काली राजकुमारी (Black Princess - गुफा संख्या 1): गहरे रंग की त्वचा वाली इस स्त्री-प्रतिमा को अत्यंत आकर्षक और गरिमापूर्ण ढंग से चित्रित किया गया है, जो दिखाता है कि कला में रंगभेद का कोई स्थान नहीं था।
- माया देवी का स्वप्न: बुद्ध की माता माया देवी को सोते हुए और हाथी का स्वप्न देखते हुए बहुत ही शांतिपूर्ण मुद्रा में दिखाया गया है।

अजंता के भित्तिचित्रों में नारी केवल एक 'भोग की वस्तु' या 'सजावटी तत्व' नहीं है, बल्कि वह सृष्टि की ऊर्जा, वात्सल्य, कला और सामाजिक जीवन का केंद्र है। अजंता की स्त्री-प्रतिमाएं प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण और कला की पराकाष्ठा को बयां करती हैं।

विचार-विमर्श

अजंता के भित्ति चित्र (Mural Paintings) भारत की प्राचीन और शास्त्रीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित अजंता गुफाएँ में मौजूद हैं। इन्हें 1983 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। [1, 2]

प्रमुख विशेषताएँ

- समय और काल: ये चित्र दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर पाँचवीं शताब्दी (वाकाटक काल) के बीच बनाए गए थे। [1]
- विषय: अधिकांश चित्र बौद्ध धर्म, भगवान बुद्ध के जीवन प्रसंगों और जातक कथाओं पर आधारित हैं। [1, 2]
- प्रसिद्ध चित्र: यहाँ 'पद्मपाणि बोधिसत्व', 'वज्रपाणि', 'महासुत सोम जातक' और गुफा संख्या 17 के चित्र अत्यंत प्रसिद्ध हैं। [1]
- तकनीक: इन्हें 'फ्रेस्को' (गीली भित्ति तकनीक) नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये सूखी सतह पर 'टेम्पेरा' (Tempera) तकनीक से बनाए गए थे। [1]

बनाने की विधि और सामग्री

- दीवार की तैयारी: चट्टानों को खुरदुरा कर उस पर गोबर, पत्थर का चूना, बारीक मिट्टी और धान की भूसी का लेप लगाया जाता था। [1, 2]
- सफेद परत: इस गारे के ऊपर चूने या काओलिन (Kaolin) की एक पतली सफेद परत चढ़ाई जाती थी। [1]
- रंग: लाल और पीला गेरू, हरी मिट्टी, लाल सीसा, ऑर्पिमेंट और गहरा नीला जैसे प्राकृतिक खनिज रंगों का प्रयोग किया गया था। [1, 2]
- छाया और गोलाई: चित्रों को उभार, गहराई और त्रि-आयामी (3D) प्रभाव देने के लिए विशेष प्रकार की छाया और रेखाओं का उपयोग होता था। [1, 2]

भारतीय समाज और साहित्य में नारी जीवन और स्त्री-प्रतिमा (Woman's Image/Representation) का स्वरूप अत्यंत व्यापक, गतिशील और ऐतिहासिक उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। [1, 2]

1. ऐतिहासिक एवं कालिक विकास [7,8,9]

- वैदिक काल: स्त्री को शिक्षा, उपनयन, और शास्त्रार्थ के समान अधिकार प्राप्त थे; इस काल में मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है। [1]
- मध्यकाल: इस दौर में सामंती और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण स्त्री की स्वतंत्रता पर पाबंदियां लगीं; पर्दा प्रथा, बाल-विवाह और सती प्रथा जैसी कुप्रथाएँ उभरीं। [1]
- आधुनिक काल एवं सुधार: राजा राममोहन राय (सती प्रथा निषेध 1829), ईश्वरचंद्र विद्यासागर (विधवा पुनर्विवाह 1856) और डॉ. बी.आर. अंबेडकर (हिंदू कोड बिल) के प्रयासों से कानूनी सुधार हुए। [1]

---

2. साहित्य और संस्कृति में स्त्री-प्रतिमा

- देवी और शक्ति का रूप: प्राचीन एवं पारंपरिक दृष्टिकोण में स्त्री को 'नारी तू नारायणी' मानकर देवी, शक्ति, त्याग और ममता की मूरत के रूप में देखा गया। [1, 2]
- त्याग और सहिष्णुता की मूरत: साहित्य (जैसे प्रेमचंद के उपन्यासों या महादेवी वर्मा के संस्मरणों) में स्त्री को परिवार की धुरी, करुणा और सहनशीलता के प्रतीक के रूप में उकेरा गया। [1, 2, 3]

- विमर्श और संघर्ष: आधुनिक हिंदी साहित्य में ममता कालिया और महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों ने स्त्री की सामाजिक पराधीनता, अस्मिता और स्व-अस्तित्व के संघर्ष को मुखर किया है। [1, 2]

3. वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

- सशक्तिकरण एवं अधिकार: शिक्षा और आर्थिक अवसरों के खुलने से आज की महिलाएँ प्रशासन, विज्ञान, राजनीति और खेल समेत हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं। [1]
- संरचनात्मक संघर्ष: कानूनी समानता के बावजूद समाज में आज भी घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। [1]

परिणाम

इन चेहरों की शैली में भी कुछ बहुत ही अलग बात है। उनकी शारीरिक बनावट और जिस दुनिया में उन्हें चित्रित किया गया है, वह भले ही पूरी तरह से भारतीय हो, फिर भी कलाकार के लंबे, गहरे ब्रश स्ट्रोक, परिप्रेक्ष्य और त्रि-चौथाई प्रोफाइल का उपयोग, बड़ी भूरी आँखों और गालों पर प्रकाश का खेल, और रंगों के चयन और चूने के मोर्टार के उपयोग जैसे तकनीकी पहलू, सभी हेलेनिस्टिक प्रभाव की झलक दिखाते हैं।[10,11,12]

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है: आखिरकार, उस समय इंडो-ग्रीक राजाओं का शासन पंजाब तक फैला हुआ था और वे भारतीय जगत से गहराई से जुड़े हुए थे। यह आत्मीयता, क्लासिक शैली और प्रभावशाली यथार्थवाद, साथ ही इन चेहरों की भावभंगिमाओं में व्याप्त उदासी, पहली शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में ग्रीको-मिस्र के फयूम क्षेत्र से मिली मोम की ममी की उदास और विकट दुनिया से बहुत अलग नहीं है, जो पूर्व के हेलेनाइजेशन का ही परिणाम थीं। दोनों ही चित्रों में हम एक ऐसी जीवंत दुनिया में हैं कि आज भी, प्रतिकृतियों में भी, वे आपको अचंभित कर सकती हैं जब आप खुद को एक चुपचाप देख रहे सैनिक से आँखें मिलाते हुए पाते हैं, जिसने शायद बैक्ट्रियन यूनानियों से लड़ाई लड़ी हो, या एक भिक्षु से जिसने शायद सांची में मूर्तियों को बनते हुए देखा हो।

चित्रित लोगों के चेहरे इतने यथार्थवादी हैं कि ऐसा लगता है मानो ये वास्तविक व्यक्तियों के चित्र हों। बोधिसत्वों की बाद की छवियों में दिखाई देने वाला आदर्शवाद या अलौकिकता इनमें कहीं नहीं है। इसके बजाय, इन शांत, अक्सर अनिश्चित, सातवाहन चेहरों की खामोश निगाहों में एक गहरा सम्मोहक आकर्षण है। उनके क्षणिक भाव जमे हुए, चौंके हुए से लगते हैं, मानो राजा के बाण चलाने के निर्णय या पेड़ों को चीरते हुए विशाल हाथी की भव्यता से अचानक आश्चर्यचकित हो गए हों। दर्शक इन आकृतियों को ध्यान से देखते हुए प्राचीन भारत में उनके द्वारा देखे गए उथल-पुथल और विचित्र दृश्यों का कुछ संकेत पाने की कोशिश करता है। लेकिन उनके शांत, निर्मल, मानवीय इंडो-हेलेनिस्टिक चेहरे हमें भेदते रहते हैं।

इन भित्ति चित्रों में चित्रित लोगों के बारे में शायद सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि वे इतने परिचित लगते हैं। दो हज़ार साल पहले बने ये चेहरे, अलग-अलग लोगों के चरित्र को बड़ी सहजता से बयां करते हैं: चौकस रक्षक, शिकार के रोमांच में डूबा राजा, पानी लाता आज्ञाकारी पुत्र। वास्तव में, ये चेहरे इतने समकालीन हैं कि आपको बार-बार याद दिलाना पड़ता है कि ये लोग हमारी दुनिया के नहीं हैं, बल्कि उस दरबार के चित्र हैं जो दो हज़ार साल से भी पहले इन अब वीरान पहाड़ियों से गायब हो गया था।

फिर भी ये वही लोग हैं जो आज पश्चिमी भारत में रहते हैं: इन तस्वीरों को देखकर आप समय की उस विशाल दूरी को महसूस किए बिना नहीं रह सकते जो उन्हें हमसे अलग करती है; और फिर भी उनकी आँखों में एक ऐसी भावनात्मक निकटता दिखाई देती है जो सहजता से समझ में आती है। इस लेख के लिए फोटोग्राफी करने हेतु जब कांच के आवरण हटाए जा रहे थे, तब पहरेदार आपस में मज़ाक कर रहे थे कि चित्रित आकृति किस पहरेदार से सबसे ज़्यादा मिलती-जुलती है। गुफा की दीवारों पर बनी महिलाओं ने वही चूड़ियाँ पहनी हैं जो इन पहाड़ियों की बंजारा जनजातियाँ आज भी अपनी कलाइयों पर पहनती हैं, और उनके दुपट्टे तारकाम या पैठानी की झालरों से सजे हैं जो आज भी महाराष्ट्र में लोकप्रिय हैं, ठीक वैसे ही जैसे श्याम जातक में वर्णित शिकारियों द्वारा पहने जाने वाले मछली के शल्क जैसे खाम वस्त्र हैं। 2000 साल से भी पहले मर चुके पुरुषों और महिलाओं की आँखों में देखना भयावह है; लेकिन उससे भी ज़्यादा अजीब यह महसूस करना है कि उनके चेहरे किसी तरह आश्वस्त करने वाले ढंग से पहचाने जा सकते हैं।[13,14,15]

- अजंता गुफा चित्रकला बौद्ध कला की उत्कृष्ट कृति एवं यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल हैं और भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-ASI) का संरक्षित स्मारक हैं।
- राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (CSIR-NEERI) की एक शोध टीम ने अजंता की गुफाओं से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया और इनके चित्रों को हानि पहुँचाने वाले विभिन्न कारकों को रेखांकित किया तथा साथ ही इस समस्या के कुछ पर्यावरण अनुकूल समाधानों का भी उल्लेख किया है।

चित्रकला को प्रभावित करने वाले कारण:

- NEERI के अनुसार, अजंता चित्रों को हानि पहुँचाने वाले कीड़ों में सिल्वर फिश, झींगुर और सामान्य कीड़े थे।
- एक अन्य मुख्य कारण वर्षा जल तथा वाघुर नदी से पानी का प्रवेश था। यह गुफा के वातावरण में नमी पैदा करता है, जिससे शैवाल, कवक, कीड़े और सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है। ये सभी एक साथ चित्रों के मूल रंग जैसे- सफेद रंग को पीले रंग में और नीले रंग को हरे रंग में बदल रहे थे।

सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति के कारण:

- अजंता की गुफाओं के पास स्थित एलोरा की गुफाओं में चित्रों एवं नक्काशी के संरक्षण के लिये जूट, चूना और मिटटी के प्रभावी मिश्रण का उपयोग किया गया था लेकिन अजंता की गुफाओं में इस पद्धति का उपयोग नहीं किया गया था।
- पिछले अध्ययनों से पता चला है कि भित्ति चित्रों की आधारभूत परत मिट्टी के प्लास्टर और कार्बनिक पदार्थ जैसे धान की भूसी, घास, वानस्पतिक रेशों से बनी थीं, इस प्रकार यह रोगाणुओं और कीड़ों के लिये एक अच्छा प्रजनन स्थल बना।
- हालाँकि ASI ने चमगादड़ों और कबूतरों के अजंता गुफाओं से बाहर निकलने के लिये कई पहलें शुरू की हैं परंतु ये सभी पहलें विफल हो गईं जिससे चमगादड़ तथा अन्य पक्षियों के मल-मूत्र से गुफा-चित्रों को नुकसान पहुँचता है।

निवारण हेतु सुझाव:

- शोधकर्त्ताओं ने कीड़ों की समस्या से निपटने के लिये कुछ प्रकाश और रंगों का उपयोग करने का सुझाव दिया है। उदाहरण के लिये उन्होंने रात्रिचर कीड़ों से बचाव के लिये पराबैंगनी प्रकाश का जाल बिछाने का सुझाव दिया है क्योंकि रात्रिचर कीड़े पराबैंगनी विकिरण की तरफ अधिक आकर्षित होते हैं।
  - इसके साथ ही दिन में विचरण करने वाले कीड़े पीले रंग की तरफ अधिक आकर्षित होते हैं इसीलिये शोधार्थियों ने इस प्रकार के कीड़ों से छुटकारा पाने के लिये पीले प्रकाश का जाल बिछाने का सुझाव दिया है। यह सुझाव कीट-पतंगों के नियंत्रण के लिये भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।
  - कीड़ों के प्रकाशानुकूल व्यवहार को समझकर उपयुक्त तरंगदैर्ध्य के प्रकाश का प्रयोग कीड़ों को आकर्षित करने के लिये किया जा सकता है।[16,17,18]
  - अजंता के चित्रों को विकृत होने से बचाने के लिये ASI वर्तमान में कुछ निवारक उपचार कर रहा है जैसे कि कीटनाशकों और शाकनाशियों का छिड़काव, गुफा की दीवारों के ढीले प्लास्टर को ठीक करना, नियमित सफाई और दीवारों पर परिरक्षकों का लेप करना।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन
(United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization-UNESCO)

- UNESCO की स्थापना 16 नवंबर, 1945 को लंदन में हुई थी।
- इसका मुख्यालय पेरिस (फ्राँस) में है।
- UNESCO का उद्देश्य शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और संचार के माध्यम से राष्ट्रों के बीच सहयोग बढ़ाकर शांति एवं सुरक्षा को बढ़ावा देना है ताकि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में वर्णित न्याय, मानवाधिकार और मौलिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की जा सके।

UNESCO की विश्व धरोहरों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है-

- प्राकृतिक धरोहर स्थल
- सांस्कृतिक धरोहर स्थल
- मिश्रित धरोहर स्थल

निष्कर्ष

अजंता गुफाओं की कृति उनके चित्रों की विशिष्ट समृद्धि और सुंदरता पर आश्रित है। ये भित्तिचित्र खुरदुरे पत्थर पर धवलित भूमि तैयार करके धातुराग या गेरू की वर्तिका या लेखनी से आकारजनिका रेखा खींचकर लिखे गए थे। तत्पश्चात् रक्त, पीत, नील, हरित और कृष्ण वर्णों से इनके रंग भरे गए। गुफा 10 में छदंत की कथा चित्रित है। स्त्री-पुरुषों की आकृतियाँ और सज्जा भरहुत और साँची के शिल्पांकन के सदृश हैं। चित्रों का रेखासौष्ठव उनके आलेखन कौशल का प्रमाण देता है। गुहा की भित्तियों पर अनेक पुरुषों के चित्र लिखे हैं। वास्तविक चित्र समृद्धि गुप्त-वाकाटक-युग की चैत्यगुहा 19 और विहारगुहा 16, 17 की भित्तियों पर पाई जाती है। इन गुफाओं के विशाल मंडप, जो 50 फुट से अधिक लंबे चौड़े हैं, की छतें स्तंभ भित्तियाँ आदि सर्वांग में चित्रों से मंडित थीं। छतों में शतपत्र और सहस्रपत्र कमलों के बड़े-बड़े फुल्ले शोभा के विशिष्ट उदाहरण हैं। कमलों के चारों ओर फुल्लावली रत्न तथा और भी अलंकरण हैं; जैसे गुहा 2 की छत में फुल्लावली, मणिरत्नखचित वक्तव्य, माय। मेघमाला एवं पत्र पुष्प की महावल्ली दर्शनीय है। कमल की उड़ती हुई लतर, हंसों के शावक या उड़ते हुए जोड़े, किलोल करती हुई समुद्रधेनु, जलतुरग,

जलहस्ती, मालाधारी विद्याधारी, क्रीड़ा करते हुए माणवक एवं भाँति-भाँति की पत्रावली, अलंकरण के अनेक विधान उपलब्ध होते हैं। अजंता के भित्तिचित्र स्वर्णयुग के सांस्कृतिक जीवन के प्रतिनिधि चित्र हैं। बुद्ध का महान् धर्म उनका मध्यवर्ती प्रेरक बिंदु है जिसके लिए राजकीय अंतपुरों के जीवन एवं लोकजीवन की विविध साधनाएँ समर्पित हैं। अनुत्तरज्ञानावाप्त, सर्वसत्वों का हितसुख एवं करुणात्मक कर्मजनित ध्रुवशांति का वातावरण इन चित्रों का विशेष गुण है। भारतीय स्वर्णयुग के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन की अक्षय्य सामग्री इन भित्तिचित्रों में व्याप्त है।
विहारगुहा 16 में बुद्ध के जीवनदृश्य, नंदसुंदरी कथानक एवं छदंत कथानक के दृश्य लिखित हैं। गुहा 17 की भित्तियों पर सप्तमानुषी बुद्ध, भवचक्र, सिंहावलोकन और बुद्ध के कपिलवस्तु के प्रत्यावर्तन के दृश्यों के अतिरिक्त कहीं जातककथाओं के भी चित्र अंकित हैं। इनमें विश्वंतरजातक, शिविजातक, छदंतजातक और हंसजातक के चित्र अपनी अगाध करुणा और अविचल धर्मनिष्ठा की अभिव्यक्ति के कारण स्थायी आकर्षण की वस्तु हैं। इस गुहा में मानव आकृतियाँ अपेक्षाकृत छोटे परिणाम की हैं। चैत्यगुहा 19 में बुद्ध का कपिलवस्तु प्रत्यावर्तन एवं अनेक बुद्धमूर्तियों के चित्र हैं। विहारगुहा 1 की भित्तियों पर पद्मपाणि अवलोकितेश्वर के महान् चित्र हैं जिन्हें एशिया महाद्वीप की कला में सबसे अधिक ख्याति प्राप्त है। इनके अतिरिक्त बुद्ध के मारघर्षण का भी एक अत्यंत ओजस्वी चित्र यहाँ है जिससे उस युग की धार्मिक साधना की दुर्धर्ष शक्ति का परिचय मिलता है। इसी गुहा में महाजनक जातक और शिविजातक के विशाल कथात्मक अंकन भी उल्लेखनीय हैं। वर्णों की आढ्यता और नतोन्नत संपुंजन या वर्तना की दृष्टि से विहारगुहा 2 के चित्र अतिश्रेष्ठ हैं। उनमें शांतिवादी जातक और मैत्रीबल जातक के दृश्यों का आलेखन एवं श्रावस्ती में बूद्ध के सहस्रात्मक स्वरूप के दर्शन का चित्रण भी श्लाघनीय है। वास्तु, शिल्प और चित्र इन तीनों कलाओं का संतुलित विकास अजंता की शिल्पकृतियों में उपलब्ध होता है। यहाँ के चित्रशिल्पी लगभग चौथी से सातवीं सदी तक अत्यंत आकर्षक और प्रभविष्णु रूपसत्व का निर्माण करते रहे।[19,20]

संदर्भ

1. "पद्मपानी चित्रकला, अजंता गुफा" । औरंगाबाद प्रशासन, महाराष्ट्र सरकार । मूल प्रति 2 अप्रैल 2020 को संग्रहित । 2 अप्रैल 2020 को पुनः प्राप्त ।
2. यहां जाएं: यूनेस्को विश्व धरोहर केंद्र। "अजंता गुफाएं" । यूनेस्को विश्व धरोहर केंद्र । 30 मार्च 2020 को प्राप्त किया गया ।
3. गोपाल, मदन (1990). के.एस. गौतम (संपादक). युगों के माध्यम से भारत . प्रकाशन प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. पृ. 173 .
4. रिंग, ट्रुडी; वॉटसन, नोएल; शेलिंगर, पॉल (2012). एशिया और ओशिनिया . रूटलेज. पृ. 17, 14–19 . ISBN 978-1-136-63979-1.
5. होनोर, ह्यू; फ्लेमिंग, जॉन (2005)। कला का विश्व इतिहास । लॉरेंस किंग। पृ. 228–230 । ISBN 978-1-85669-451-3.
6. मिशेल 2009 , पृ. 336.
7. अजंता गुफाएं: सलाहकार निकाय मूल्यांकन, यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद। 1982. 27 अक्टूबर 2006 को प्राप्त किया गया। 22 दिसंबर 2009 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत , पृष्ठ 2।
8. यहां जाएं: कोहेन, रिचर्ड (2013)। जॉनस्टन, विलियम एम. (संपादक)। मठवाद का विश्वकोश । रूटलेज। पृ. 18–20 । ISBN 978-1-136-78716-4.
9. जामखेडकर, अरविंद प्रभाकर (2009)। अजंता . ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पीपी. 61-62 , 71-73 . आईएसबीएन 978-0-19-569785-8.

10. " अजंता गुफाएं, भारत: संक्षिप्त विवरण, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल। 27 अक्टूबर 2006 को प्राप्त किया गया" । मूल से 18 दिसंबर 2008 को संग्रहीत । 26 दिसंबर 2019 को प्राप्त किया गया ।
11. कोहेन, रिचर्ड एस. (मई 1998)। "नागा, यक्षी, बुद्ध: स्थानीय देवता और अजंता में स्थानीय बौद्ध धर्म"। धर्मों का इतिहास . 37 (4). शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस: 360-400 . डीओआई : 10.1086/463514 । जेएसटीओआर 3176402 । एस2सीआईडी 162226757 ।
12. बेहल, बेनोय के.; निगम, संगीतिका (1998). अजंता गुफाएं: प्राचीन बौद्ध भारत का कलात्मक चमत्कार । हैरी एन. अब्राम्स। पृ. 164, 226. ISBN 978-0-8109-1983-9.
13. हार्ले 1994 , पृ. 355-361, 460।
14. यहां जाएं: कोहेन 2006ए , पृ. 32, 82.
15. स्पिंक 2007 , पृ. 3, 39.
16. इसे वाघोरा या वाघुर भी लिखा जाता है।
17. अजंता गुफाओं का नक्शा, 6 नवंबर 2020 को वेबैक मशीन पर संग्रहित , यूनेस्को
18. सान्याल, नारायण (1984)। अमर अजंता . भारती. पी। 7.
19. स्पिंक 2007 , पृ. 2.
20. भुसावल डिवीजन: पर्यटन (अजंता और एलोरा) । भारतीय रेलवे। 1996। पृ. 40